तीसरा अध्याय

३.०	**दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में चित्रित विभिन्न समस्याएँ ---**
३.१ -	प्रास्ताविक -
३.२	शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार की समस्या -
३.३	अध्यापकों की नियुक्तियों की समस्या -
३.४	कृषि योजना में भ्रष्टाचार की समस्या -
३.५	होस्टल - शोषण का ही एक रूप -
३.६	अध्यापकों के वेतन की समस्या -
३.७	अध्यापकों की उदासीनता -
३.८	गुरु-शिष्या-प्रेम की समस्या -
३.९	पूँजीवादी प्रवृत्ति की समस्या -
३.१०	चुनाव की समस्या -
३.११	साम्प्रदायिकता की समस्या -
३.१२	जमींदारों की क्रूरता -
३.१३	धर्म - रीतिरिवाज -
३.१४	पारिवारिक संघर्ष की समस्या -
३.१५	निष्कर्ष ।

तीसरा अध्याय

३.० दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में चित्रित विभिन्न समस्याएँ ---

३.१ प्रास्ताविक --

स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार के उपन्यास `आँगन में एक वृक्ष` और `छोटे-छोटे सवाल` समकालीन वातावरण की समस्याओं को प्रस्तुत करते हैं। आजादी के बाद देश के सामने अनगिनत समस्याएँ खड़ी हो गयीं। ग्रामीण समाज में जमींदारों के हथकण्डे, संयुक्त परिवार की समस्या, साम्प्रदायिकता, शिक्षा-क्षेत्र में चलनेवाला भ्रष्टाचार, शोषण जैसे अध्यापकों का आर्थिक शोषण, शिक्षा संस्थापकों के कारनामें ऐसी अनेक समस्याओं का चित्रण दुष्यन्तजी ने अपने दो लघु उपन्यासों में किया है। `छोटे - छोटे सवाल` मुख्य रूप से शिक्षा संस्थापकों की भ्रष्ट नीति, अध्यापकों के शोषण को दिखाता है, साथ ही इसमें अर्थ सामती, पूँजीवादी व्यवस्था का कच्चा चित्रण भी है।

`आँगन में एक वृक्ष` जमींदारी के अत्याचार, किसान, मजदूरों का अभाव ग्रस्त जीवन, जमींदार की संकीर्ण प्रवृत्ति, झूठा आडंबर आदि को दिखाता है। पहले हम छोटे छोटे सवाल उपन्यास की चर्चा करते हैं। दुष्यन्तजी ने अपने मित्रों की प्रेरणा से `छोटे छोटे सवाल` उपन्यास का निर्माण किया। जिन्दगी में छोटे छोटे सवाल बड़े महत्व के होते हैं। उनकी उपेक्षा करने से हमें बहुत कुछ खोना पड़ता है। यह तथ्य इसमें उजागर हुआ है। दुष्यन्तजी के शब्दों में ` प्राइवेट स्कूल कॉलेजों पर कुछ लिखने की बात मेरे मन में बहुत दिनों से थी।.... शायद तब से जब मैं अध्यापक था ... या उससे भी पूर्व जब मैं बी.टी.का विद्यार्थी था। हो सकता है, मेरे कवि व्यक्तित्व से परिचित मित्रों और स्नेहियों को यह कृति थोड़ी अप्रत्याशित लगे, किन्तु जीवन के कुछ सीधे-साधे सवालों से जूझने का मोह

या जागरूकता ही इस उपन्यास की प्रेरणा है । मेरे हाईस्कूल जीवन के गुरू श्री रामचरणसिंह त्यागी इस प्रेरणा के मूल में रहे हैं ।" [१]

दुष्यन्तजी के उर्पयुक्त कथन से स्पष्ट हैं कि उन्हें यह उपन्यास लिखने की प्रेरणा गुरू रामचरणसिंह, मित्र, तथा अपने जीवन से मिली ।

अब हम उनके उपन्यास ' छोटे छोटे सवाल ' में चित्रित विभिन्न समस्याओं की चर्चा करते है ।

३.२. शिक्षा-क्षेत्र में भ्रष्टाचार की समस्या --

आज शिक्षा संस्थाएँ अयोग्य लोगों के हाथों में चली गयी है ,जिससे शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार, शोषण, स्वार्थ बढ गया है । शिक्षा-क्षेत्र में शोषण कभी अध्यापकों की नियुक्ति के बारे में, कभी अध्यापकों के वेतन के बारे में तो कभी उनकी नौकरी के संदर्भ में होता है । शिक्षा संस्था चालक अयोग्य, भ्रष्ट होने से शिक्षा एक धन्धा एवं व्यवसाय बन चुकी है । शिक्षा के नामपर कॉलेजों में केवल व्यवसाय होता हैं और कॉलेज कुटिल राजनीति के अड्डे बन गये हैं । ऐसे कॉलेज का चित्रण इस रचना में किया गया हैं ।

३.३ अध्यापकों की नियुक्तियाँ की समस्या --

शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्ट शोषणपूर्ण वातावरण निर्माण होने से अध्यापकों की नियुक्तियाँ एक समस्या बन गई है । स्कूल कॉलेजों में उनको लिया जाता है जिनके पास पहुँच है, वजन है । फिर उनकी कॉलिफिकेशन कितनी ही कम क्यों न हो । इससे सच्चे, योग्य युवक पिछे रह जाते हैं । अयोग्य लोग मास्टर बनने से शिक्षा क्षेत्र और भी अंधकारमय बन गया है । कॉलेज कमेटी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सेक्रेटरी, मेम्बर सभी अपने लाभ को लक्ष्य करके वजनवाले उमीद्वार की ही

नियुक्ति करते हैं । इसी बात का चित्रण छोटे छोटे सवाल उपन्यास में मिलता है ।

कस्बे राजपुर के हिन्दू इण्टर कॉलेज में कुछ मास्टरों,लेक्चररों के पदों के लिये इंटरव्यू होते हैं । माथुर,पाठक,श्रोत्रिय,राजेश्वर ठाकूर,असरार,पाण्डे,रोहतगी, सत्यव्रत,आदि कई उम्मीद्वार सलेक्शन कमेटी के सामने उपस्थित होते है । इस कमेटी में कॉलेज के प्रभारी प्राचार्य उजमचंद भी हैं । उम्मीद्वारों को संगत-असंगत प्रश्नों का सामना करना पड़ता है । इण्टरव्यू में शैक्षणिक योग्यता का कोई महत्व नहीं होता । सही उत्तरों की अपेक्षा ' पहुँच ' को महत्व दिया जाता है । किसे लेना है यह पहले से ही तय है । यह इण्टरव्यू केवल दिखावा है । एक उम्मीदवार राजेश्वर के शब्दों में --" असिस्टैण्ट टीचरों और प्रोफेसरों का सेलेक्शन कभी का हो चुका । यह इण्टरव्यू तो एक फारमेल्टी है फारमेल्टी ।"[2]

हिन्दू इण्टर कॉलेज कमीटी के अध्यक्ष लाला हरीचंद लाभ उठाने में माहिर हैं । वे हिन्दी प्रोफेसर पद के लिये पाठक की नियुक्ति करते हैं । इसमें उनका नीजि स्वार्थ रहता है । पाठक डिप्टी साहब का मतीजा था । डिप्टी साहब की अदालत में लालाजी के भट्टे से संबंधित मामले रोजाना जाते ही रहते थे,इसलिये जान-पहचान भी गाढी थी । इस संदर्भ में डिप्टी साहब का संदेश भी उन्हें मिल था । इसी कारण लालाजी ने पाठक का चुनाव किया ।

सत्यव्रत को छोडकर सभी उम्मीद्वारों की अपनी ' पहुँच रहती है । असिस्टेण्ट टिचर जगह के लिये सेक्रेटरी गनेशीलाल,और उपाध्यक्ष नत्थुसिंह दोनों मेम्बरो में टक्कर होती है । दोनों के पास सिफारीशे आयी थीं । गनेशीलाल श्रोत्रिय को लेना चाहते थे क्योंकि उनके जान-पहचानेवाले वकील का श्रोत्रिय के संदर्भ एक तार आया था ।उपाध्यक्ष नत्थुसिंह कोतवाल के भानजे असरार को लेना चाहते थे । अध्यक्ष लालाजी गुटबन्दी का लाभ उठाने में बड़े माहिर थे । वे दोनों को नाखुश नहीं करना चाहते थे । दोनों से लालाजी को कुछ लाभ मिलते थे । वे दोनों को समझाकर असिस्टेण्ट टिचर के लिये सत्यव्रत को चुन लेते हैं । सत्यव्रत गुरुकुल का पढा हुआ मन,कर्म से शुध्द युवक है । ऊँचे जीवन मूल्यों में उसकी गहरी आस्था है ।

अध्यक्ष लालाजी हिन्दू कॉलेज के छात्रों को सुसंस्कारित होते देखने के इच्छुक थे। इसी कारण किसी की सिफारीश न लानेवाले सत्यव्रत की नियुक्ति होती है। सत्यव्रत के बाद असिस्टेण्ट टिचर के लिये राजेश्वर ठाकूर की नियुक्ति होती है। राजेश्वर की नियुक्ति विशेष उल्लेखनीय है। ` किसमें इतना गुर्दा है जो मेरा सलेक्शान रोक दे। कॉलेज की ईंट-से-ईंट बज जायेगी। ठकुरान के तीन सौ लडके है कॉलेज में। अगर मुस्लिम स्कूल में चले गये तो यहाँ तनख्वाह भी नही पटेगी मास्टारों की।'[3] राजेश्वर के इस कथन से वह किस बलपर नियुक्त हुआ होगा? यह स्पष्ट होता है। राजेश्वर की नियुक्ति में सलेक्शान कमेटी के कुछ मेम्बरों के अपने स्वार्थ भी थे। राजेश्वर मावले के ठाकूर साहब का पुत्र था। ठाकूर साहब गाँव के प्रभावशाली मुखिया थे। मैनेजिंग कमेटी के सेक्रेटरी गनेशीलाल और उपाध्यक्ष चौधरी नत्थुसिंह का मावले गाँव से व्यावसायिक संबंध था। गनेशीलाल के छोटे भाई लेंहसाल का काम करते थे और उनको सबसे ज्यादा माल मावले गाँव से मिलता था। नत्थुसिंह के बेटे की होम्योपैथी की प्रॅक्टीस को मावले के ठाकूर साहब द्वारा काफी मरीज मिलते थे। अध्यक्ष लाला हरीचंद ने तो इंटरव्यू से पहले ही ठाकूर को राजेश्वर के बारे में वादा किया था। यही वजह थी कि राजेश्वर ठाकूर को चुन लिया गया। स्वयं राजेश्वर कि अपनी नियुक्ति के बारे में कहता है -- ` मुझे तो इन्होंने इण्टरव्यू कार्ड तक नहीं भेजा था। मगर पिताजी मेरे जरा दबंग किस्म के आदमी हैं। वह लाला हरीचंद के भट्टेपर ईंटे लेने आये थे कुछ दिन पहले और उनसे साफ-साफ कह गये थे कि अगर लडके को स्कूल में नहीं रखा तो हमारे आंठो गाँवों का एक भी लडका यहाँ पढने नहीं आयेगा।'[४] यह कथन उसकी नियुक्ति पर प्रकाश डालता है।

इसप्रकार स्पष्ट होता है कि कॉलेज के मैनेजिंग कमेटी के लोग अपने वैयक्तिक लाभ के आधार पर अध्यापकों का सिलेक्शन करते हैं। आज लगभग सभी शिक्षा संस्थाओं में वैयक्तिक स्वार्थ के आधारपर ही अध्यापकों की नियुक्तियाँ होती हैं। जिनके पास वजन सिफारीश है, उन्हीं को लिया जाता है। यह भ्रष्टनीति शिक्षा क्षेत्र को खोखला कर रही है।

३.४ कृषि-योजना में भ्रष्टाचार की समस्या --

हिन्दू इण्टर कॉलेज की मनैजिंग कमेटी महात्मा गांधी के चिन्तन से प्रभावित होकर स्वावलंबन के उद्देश्य से कृषि-योजना आरंभ करती है। लेकिन यह योजना भ्रष्टाचार का एक रूप लगती है क्योंकि इसका लाभ अध्यापकों - छात्रों को नहीं मिलता। इस योजना की सारी आय अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी हड़प लेते हैं। एक तरह से उनके पास सारी आय जाती है।

अध्यक्ष लाला हरीचंदजी ने कॉलेज की सौ बीघा जमीन में खेती शुरु करायी और उसका नाम रखा `कॉलेज कृषि योजना` इस योजना में कॉलेज के छात्रों से श्रम लिया जाता था। इ इसके लिये छात्रों को अनेक सुविधाएँ दी गयी जैसे फसल की बुवाई और कटाई के दिनों में अनुपस्थित रहने के बावजूद कक्षाध्यापकों के रजिस्टरों में उनकी हाजिरी लगती थी। गैर हाजिरी का कोई जुर्माना उन्हें नही देना पडता था और कृषि योजना के बटाने वे जब चाहे कॉलेज छोडकर कही भी आ जा सकते थे।`[५] इन सुविधाओं के मोह में बहुत से छात्र कृषि योजना की ओर आकर्षित हुये। पढाई-लिखाई से उनका ध्यान हटने लगा। परिणाम स्वरूप बहुत से छात्र अपनी परीक्षाओं में असफल हो गये। स्वावलंबन की आड में छात्रों से श्रम लेना छात्रों का शोषण था। जयप्रकाश को इसी बात का दुःख होता है। उसे भ्रष्टाचार का उतना दुःख नहीं होता। परीक्षाओं की तैयारी करने के दिनों में भी संबंधित छात्रों को कृषि योजना में कठोर शारीरिक श्रम करने पड़ते है। इसका दुष्परिणाम उनके शैक्षणिक पतन से हो जाता है। इसी बात को समझाकर अध्यापक जयप्रकाश कृषि-योजना का विरोध करता रहता है। मैनेजिंग कमेटी प्रिन्सिपल द्वारा एक आदेश निकालवाकर ` कृषि-योजना का विरोध मैनेजिंग कमेटी का विरोध है और ऐसा करनेवाले अध्यापकों के विरुध्द कोई भी कार्यवाही की जा सकेगी।"[६] विरोध को दबा देती है। जयप्रकाश अकेला रहने से चुप हो जाता है।

नये अध्यापकों में राजेश्वर ठाकूर का साथ मिलनेपर जयप्रकाश फिर से कृषि योजना का विरोध करने लगता है । इस बार जयप्रकाश को राजेश्वर के परिचित छात्रों का और अपने छात्रों का समर्थन प्राप्त होनेपर वह कृषि योजना को ठप कर देने में कामयाब होता है । कृषि योजना के संचालक प्रिन्सिपल उग्रचंद योजना चालू रखने में असफल होते हैं ।

कॉलेज कमीटी के पदाधिकारी समझते थे कि छात्रों के स्वास्थ्य के लिये परिश्रम आवश्यक है और कृषि-योजना में शारीरिक श्रम के कारण योजना छात्रों के हीत की है । पर उनके स्वार्थ,शोषण को जयप्रकाश राजेश्वर पहचानते है और योजना ठप करने मे सफल होते है ।

अत: स्पष्ट है कि कॉलेज कमेटी के लोग कृषि योजना की आड में छात्रों का शोषण करते हैं। इस योजना में उनका अपना आर्थिक लाभ था ।

३.५ हास्टल - शोषण का ही एक रूप --

कृषि योजना के बंद होने पर मैनेजिंग कमेटी के लोग राजपुर में हास्टल खोलते हैं । यह हास्टल भी शोषण का एक रूप है । हास्टल की आड में मैनेजिंग कमेटी के लोग देहाती छात्रों का शोषण करते हैं । उस शोषण से होनेवाला आर्थिक लाभ अध्यक्ष हरीचंद सेक्रेटरी गनेशीलाल के साथ उपाध्यक्ष नत्थुसिंह को भी अप्रत्यक्ष रूप से मिलता है ।

राजपुर में बाहर से आये छात्रों के लिये खाने-पिने रहने की अच्छी व्यवस्था नहीं थी । इसी बात को लक्ष करके अध्यक्ष हरीचंद अपना स्वार्थ पाने के लिये मीटींग में कहते हैं --" बच्चों का खाना-पिना उनकी दवा-दारु और लिखाई-पढाई के ये सारे प्रश्न तब तक हल नहीं हो सकते जबतक हमारे यहाँ कोई हास्टल न हो ।"[७] अपने लाभ के लिये वे हास्टल का प्रस्ताव रखते हैं ।वे अपनी खाली पडी घुडसाल की जगह में हास्टल खुलवाकर अच्छा किराया वसूल करना चाहते है ।

गनेशीलाल हास्टल के सामने होटल खुलवाकर उसी में छात्रों को भोजन

करनेपर विवश कराकर अच्छी कमाई करना चाहते हैं। अपनी इसी व्यावसायिक इच्छा-पूर्ति के लिये गनेशीलाल हरीचंद की जगह को योग्य बनाकर अच्छा किराया भी तय करते हैं ।

हास्टल के पड़ोस में नत्थुसिंह का मकान रहता है । वे सत्यव्रत को हास्टल का प्रमुख नियुक्त करके अपनी बेटी की टयुशन की समस्या हल करते है । हास्टल के खुलने से नत्थुसिंह सोचते हैं । हास्टल के छात्र मरीज बनकर उनके डाक्टर बेटे के पास आयेंगे । इस प्रकार नत्थुसिंह को भी अप्रत्यक्ष रूप से लाभ मिलता हैं । मैनेजिंग कमेटी के इन तीनों पदाधिकारियों का स्वार्थ रहता है ।

हास्टल की जगह के सिलसिले में मेम्बरों में मतभेद भी होते हैं । ज्वाईंट सेक्रेटरी गुलजारीमल की इच्छा थी कि अपनी जगह हास्टल के लिये तय हो जाए । वे हरीचंद की जगह को बेकार बताते हैं । पर गनेशीलाल,नत्थुसिंह का साथ हरीचंद को मिलने से चुप हो जाते हैं ।

सेक्रेटरी गनेशीलाल का भाई हास्टल के सामने होटल खोलता है,परन्तु घटिया भोजन और साफ-सफाई न होने से छात्र हास्टल में खाना बंद कर देते हैं ; सभी छात्र एक होकर एक रसोईये को नियुक्तकर हास्टल में ही खाना बनवाते हैं । इससे गनेशीलाल के स्वार्थ को धक्का पहुँचता है । तब वह लाला हरीचंद पर दबाव डालकर छात्रों की मेस बंद करने का काम करता है । इसकी तीव्र प्रतिक्रिया छात्रों में होती हैं । जब उनपर खाने के लिये जोर-जबरदस्ती की जाने लगती है तब वे हड़ताल करते है ।

अध्यापक जयप्रकाश को हास्टल,होटल खुलवाने के पिछे शोषण की बू आती है । वह कहता है मैं अनुभव करता हूँ कि बाहर के छात्रों के लिये हास्टल खुलना नितांत आवश्यक था, मगर मैं यह अनुभव नहीं करता कि वह हास्टल यहाँ इस
में ही खुलना चाहिए था । मैं जानता हूँ कि हास्टल के छात्रों से किराये के रूप में प्राप्त आय मैनेजमेण्ट के लोग खा नहीं सकते, मगर वे हास्टल के माध्यम से

आमदनी के और जरिये ढूँढ सकते है जैसे गनेशीलाल के छोटे भाई सोहन ने सामने होटल खोल लिया है।"[८] वास्तव में कॉलेज के मैनेजिंग कमेटी के पदाधिकारियों को छात्रों की असुविधा की चिंता नहीं थी। अगर उन्हें सचमुच छात्रों के प्रति चिंता रहती तो वे होस्टल का किराया न लेते,इसके पूर्व किसी दूसरी जगह खुलवाते, साथ ही कम दामों में छात्रों को भोजन देते, लेकिन ऐसा दिखाई नहीं देता अध्यक्ष हरीचंद अपनी खाली जगह का अच्छा किराया लेते हैं। गनेशीलाल अधिक पैसे लेकर छात्रों को घटिया भोजन देते हैं। छात्रों की नापसंदगी पर उन्हें जबरदस्ती भोजन के लिये राजी किया जाता है। इन बातों से स्पष्ट होता है कि कॉलेज के पदाधिकारि होस्टल की आड में कॉलेज छात्रों का शोषण करते थे। इसके लिये ही उन्होंने होस्टल,होटल खुलवाया था।

३.६ अध्यापकों के वेतन की समस्या --

मैनेजिंग कमेटी के पदाधिकारी अध्यापकों का भी शोषण करते हैं। यह शोषण वेतन के रूप में होता है। अध्यापकों को तीन-तीन महीने वेतन नहीं मिलता। इतनाही नहीं तो कुछ अध्यापकों को सौ रूपये वेतन देकर उनसे डेढ सौ रूपयों पर हस्ताक्षर लिया जाता है। अध्यापक शास्त्रीजी उच्च कक्षाओं को पढाते हैं और उन्हें वेतन मिलता है, सहायक अध्यापक का। इस विषय में आवाज उढानेपर कॉलेज सेवा से हटाने की धमकी मिलती है। शास्त्रीजी के शब्दों में "मैं गत कितने वर्षों से उच्च कक्षाओं के छात्रों को पढा रहा हूँ, किन्तु वेतन मुझे सहायक अध्यापक का ही मिल रहा है और जिस वर्ष मैं अपने अधिकार के लिये समिति के सामने प्रश्न उठाता हूँ, उसी वर्ष वे संस्कृत अध्यापक का स्थान पत्रों में विज्ञापित करके आवेदन पत्र आमंत्रित करते हैं और मुझे अपदस्य करने का भय दिखाकर चुप करा देते है।"[९]

इस कथन से मैनेजमेन्ट द्वारा शोषण सामने आता है। ये लोग प्रिन्सिपल द्वारा एक महीने की तनख्वाह डोनेशन के रूप में लेकर बचे हुये महीने

की तनख्वाह देते है । इस तरह मैनेजमेन्ट के लोग अध्यापकों का शोषण करने के पिचे तरह-तरह के हथकण्डे अपनाते हैं ।

उत्तमचंद सहकारी अध्यापकों से कहते है ` अब की टीचर्स की तनख्वाहें तीन महीने से पहले नहीं मिलेगी । पवन बता रहा था - इस बार ग्रॅण्ट नहीं आयी है अभी तक मैनेजमेण्ट ने फैसला किया है कि टीचर्स की तनख्वाहे दशहरा की छुटीयों के बाद दी जायें ।' १०

ग्रॅण्ट आनेपर भी मैनेजमेण्ट के अध्यापकों वेतन नहीं देते । अध्यापक गुप्ताजी के शब्दों में अब तो ऐड (अनुदान) भी आ गई है । अब भी तनख्वाह न मिले तो हद है ।' ११ अध्यापकों के इन कथनों से स्पष्ट होता है कि मैनेजमेण्ट अध्यापकों के वेतन के बारे में कितनी लापरवाह है । अंत में न्याय पाने के लिये अध्यापक टिचर्स एसोसियेशन बनाते हैं । उसके जरिए मैनेजमेण्ट को वेतन के बारे में सूचनाएँ भिजवाते हैं पर उन्हें सफलता नहीं मिलती । इस प्रकार उपन्यासकार ने दिखाया है कि शिक्षासंस्थाओं में भी भ्रष्टाचार किस प्रकार बढता जा रहा है ।

३.७ अध्यापकों की उदासीनता --

शिक्षा संस्था में चलनेवाला भ्रष्टाचार शोषण के फलस्वरुप अध्यापकों में ज्ञानदान के प्रति उदासीनता आ गई है । आज ६८ शिक्षा संस्था में यह समस्या कम-अधिक मात्रा में दिखाई देती है । यह समस्या अध्यापक जयप्रकाश, सत्यव्रत के माध्यम से सामने आई हैं । राजपुर के हिन्दू कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी कॉलेज के कामकाज में दखल देकर विविध प्रकार से शोषण करती है । अध्यापक जयप्रकाश को शोषण स्वार्थ के जाले दिखाई देते हैं । उसके विचारों में जबतक ये जाले साफ नहीं होंगे, यह संस्था आदर्श शिक्षण संस्था नही बन सकती ।' १२

अध्यापक सत्यव्रत ने गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की है । शिक्षाधान की अच्छी कल्पनाएँ उसके मन में है । सत्यव्रत हिन्दू इण्टर कॉलेज के भ्रष्ट ,शोषक वातावरण का देखता है तो नाराज हो जाता है । वह अपने मन की बात जयप्रकाश के सामने

व्यक्त करता है' शिक्षा का जो पूनीत स्वप्न मेरे मन में था और है । उसे साकार करने का यहाँ कोई अवसर नहीं । न वातावरण है न संगी साथी । .... यहाँ अध्यापकों में शिक्षा के प्रति कितनी विरक्ति और परनिन्दा में कितनी लिप्सा है ... ? शिक्षादान की जो भी महती कल्पनाएँ मेरे मन में थी, सब चकनाचूर हो रही है यहाँ आकर ।'[१३]

जयप्रकाश को यह सब मालुम है । वह जानता है कि सब जगह और सारे स्कूलों में कम-अधिक ऐसा ही वातावरण रहता है और सब जगह अध्यापकों पर सबसे ज्यादा अत्याचार होते है । इसी कारण वह सत्यव्रत को समझाता है कि इस आजाद हिंदुस्तान में यही वातावरण है जयप्रकाश एक चालाक होशियार अध्यापक है । पहले वह कॉलेज में बिखरे शोषण एवं स्वार्थ के जाल को खत्म करना चाहता है । इसलिये वह मैनेजमेण्ट का विरोध करता रहता है । इस प्रकार शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्ठ वातावरण से अध्यापकों में जो उदासीनता आ गई है उसी की ओर भी दुष्यन्तजी ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है ।

३.८ गुरु-शिष्या प्रेम की समस्या --

प्रस्तुत उपन्यास में यह समस्या अध्यापक सत्यव्रत और उनकी शिष्या विमला के माध्यम से उभरी है । विमला हिन्दू कॉलेज के उपाध्यक्ष चौधरी नत्थुसिंह की बेटी है । होस्टल के पडोस में नत्थुसिंह का घर है । चौधरी साहब के अनुरोध पर सत्यव्रत विमला को पढाने जाता है । विमला रोमँटीक प्रवृत्ति की युवती है । वह सत्यव्रत के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर गुरु-शिष्य के पवित्र संबंध का एहसास नहीं करती । पढाई के वक्त हमेशा सत्यव्रत का स्पर्श प्राप्त करने का प्रयत्न करती रहती है । अपने मकान के पीछे जीनेपर खडी होकर सत्यव्रत की कोठरी की ओर देखती रहती है। लेकिन सत्यव्रत गुरुकुल के संस्कारों में पला युवक है । उसके विचारों में शिष्या आत्मजा होती है । विमला की प्रतिदिन की हरकतों को वह समझ नहीं पाता कि यह मामला इतना गंभीर कैसे हो गया है । उसने कभी विमला को छूने का प्रयत्न

नहीं किया । विमला ही उसका अवसर मिलते ही स्पर्श करती रहती है । वह उसे रोक भी नहीं पाता । विमला का यह आचरण वह अपने संयम के लिये चुनौती मानता है । विमला सामने आते ही कुछ क्षणों के लिये उसका मन डाँवाडोल भी हो जाता है । वह विमला की आँखों में आँसू देखकर कहता है " मैं स्वीकार करता हूँ कि तुम मुझे अच्छी लगती हो । तुम्हारे लिये एक विचित्र सी दुर्बलता मेरे मन में उत्पन्न हो गयी है ।" [१४]

लेकिन विमला रोमैंटीक प्रवृत्ति की युवती है । उसका मन सत्यव्रत के प्रेम के लिये व्याकुल रहता है । एक मध्यरात्रि वह सत्यव्रत के कमरे में जाती है और सत्यव्रत से प्रणयक्रिड़ा की मांग करती है । सत्यव्रत कर्तव्य संयम को अधिक महत्त्व देता है । अपने संयम को दुर्बलता के सामने पराजित होते हुए नहीं देख सकता । इसलिये विमला द्वारा प्रणय याचना करने पर कहता है --" जिस शारीरिक वासना को तुम तृप्त करना चाहती हो वह मुझसे सम्भव नहीं । मैं तो रेगिस्तान हूँ - ऐसे संस्कारों का रेगिस्तान,जहाँ आकट वासना की बड़ी-से-बड़ी नदी सूख जाती है ।" [१५]

अपने को समर्पित करनेवाली विमला सत्यव्रत को पा नहीं सकती और अपने सौन्दर्य तथा प्रेम के प्रति उदासीनता देखकर उससे कहती है " मैं तुम्हें खूब समझ गयी हूँ । तुम ... तुम या तो ढोंगी हो या... या नपूंसक ।" [१६]

३.९ पूँजीवादी प्रवृत्ति की समस्या --

राजपुर के हिन्दू कॉलेज के अध्यक्ष लाला हरीचंद राजपुर गाँव में पूँजीपति की हैसियत रखते थे । हरीचंद धन को दृष्टि से पूँजीपति नहीं थे । लेकिन रेव और हथकण्डे उन्हीं जैसे सीख लिये थे । उसका प्रत्येक कार्य पूँजीवादी प्रवृत्ति को दर्शाता है । हरीचंद अपने आपको पूँजीपति से कम नहीं समझते थे । वे श्रम की उपेक्षा करके शोषण द्वारा धन उपार्जित करना चाहते थे । एक घटना से उनकी पूँजीवादी प्रवृत्ति सामने आती है । लालजी की ईंटों की भट्टियाँ थीं । सरकार ने ईंटोंपर भी कन्ट्रोल लगाया था । और हरीचंद ने कन्ट्रोल से बाहर ईंटे बनायी थी । उन्हें खबर मिली

थी कि कोई बड़ा अफसर उनके भट्टेपर ईंटों का स्टॉक चेक करने के लिये आनेवाला है। वे कॉलेज के छात्रों की सहायता से ज्यादा ईंटें कॉलेज में रखना चाहते थे, ताकि जाँच होनेपर कोई आफत न आये। वे जानते थे कि उनके कहनेपर लड़के नही आयेंगे, इसलिये उन्होंने जयप्रकाश, राजेश्वर को आगे किया और लड़कों से काम करवा लिया। दूसरी ओर बड़े अफसर को लेने के लिये प्रिन्सिपल और सत्यव्रत को स्टेशन भेज दिया। काम बन जानेपर अध्यापकों को खुश करने के लिये दूध बर्फी खिलायी। लेकिन काम करनेवाले लड़कों को दूध मिठाई के लिये पूछा भी नहीं। बड़ों को खुश करना, छोटों से काम लेकर उन्हें न पूछना पूँजीवादी प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। ऐसे लोगों को रिश्वत देने की आदती होती है, वे पारिश्रमिक नहीं दिया करते। लाला हरीचंदजी ने अध्यापकों को खुश करने के लिये मिठाई खिलाई और कुछ मजदूरों की मजदूरी बचा ली। अब वे जरूरत पढनेपर लड़कों को मजदूरों के साथ कामपर लायेंगे। लालाजी की इस नीति को जयप्रकाश पूँजीवादी मनोवृत्ति कहता है। जयप्रकाश सत्यव्रत से इस बारे में कहता है" देखा आपने। ये जानते है कि न्याय और हक के लिये आवाज उठानेवाले सब लोग नहीं होते थोड़े से नहीं होते और उन्हे ये कुछ न कुछ खिला पिलाकर वश में कर लेते है, इसलिये तो बड़े-बड़े प्रेस, अखबार, संपादक और कवि लेखक वगैरा पूँजीपतियों या सरकार के हाथ बड़ी-बड़ी कीमतोंपर बिके है। हम लोग मामुली आदमी है। इसलिये हमारा मुँह मिठाई खिलाकर ही [illegible] दिया जाता है।"[१७] जयप्रकाश का यह कथन लाला हरीचंद की पूँजीवादी मनोवृत्ति पर प्रकाश डालता है।

३.१० चुनाव की समस्या --

राजपुर गाँव में नगरपरिषद के चुनाव होनेवाले थे। इसके लिये हिन्दू कॉलेज के लाला हरीचंद और दूसरे कमेटी मेम्बर बाबू हरकरण सहाय दोनों एक-दूसरे के प्रति-द्वन्द्वी थे। दुष्यन्तजी ने चुनाव के वातावरण का चित्र इस प्रकार किया है -- " सड़कोंपर दीवारोंपर तांगोंपर और तमाम सार्वजनिक स्थानोंपर वोट मांगनेवालों के इश्तिहार चिपके है। रात-दिन काम हो रहा है। उम्मीद्वारों को एक मिनट की

फुरसत नहीं है। वे दिनरात घुम रहे है। रोजाना जुलुस निकलते है। जलसे होते है और उम्मीद्‌वारों के भाषण होते है। लाऊड-स्पीकरों की आवाज से कानों के परदें फटे पढते है।"[१८] लाला हरीचंद और बाबू हरकरण सहाय दोनों के कार्य--कर्ता रात-दिन काम में डुब रहते है। मास्टर जयप्रकाश बाबू साहब के लिये जी तोड मेहनत करता है। मुस्लिम स्कूल कमेटी के सेक्रेटरी से मिलकर बाबू साहब के लिये वोट जुटावे का प्रयत्न करता है। बाबू साहब की योग्यता को स्पष्ट करने के लिये सेक्रेटरी से करना है कि बाबूजी शरीफ आदमी है। वे किसी के झगडे में नहीं रहते। ऐसे व्यक्ति मुस्लिम स्कूल का सपोर्ट मिलनी चाहिए। इतनाही नही तो जयप्रकाश कॉलेज के लडकों को भी प्रचार कार्य में शामिल करता है। इसकी खबर मिलनेपर लालाजी परेशान होते है। अपनी शक्ति बढाने के लिये सत्यव्रत को आदेश देते है कि आप मेरे आदमी है। आपकी सारी सक्ती और सारे विद्यार्थी इस इलेक्शन में मेरा साथ देगें। जनतापर अपना प्रभाव जमाने के लिये लाला हरीचंद प्रतिद्वन्द्वी बाबू हरकरण की पगडी उछालने में नहीं चुकते। प्रचार सभा में बाबू साहब पर टिप्पणी करते हैं "भय्यो। मुझसे पूछो वो जिसके दिमाग में अफसरी की बू है, वो, जो मुझ जैसे बूढे आदमी कू भी तुम गन्धे हों कह सकता है, वो कलक्टर हो सकता है, पर जनता का सेवक नई हो सकता। सेवा ऐसा का[illegible] उसमें आदमी कू झुकवा पडे है। पतलून और हैट लगाके जनता पे अफसर[illegible] सके पर उसकी सेवा नई हो सक्ती।"[१९] चुनाव के प्रचार में उम्मीद्‌वार प्रतिद्वन्द्वी के दोष दिखाकर अपनी योग्यता सिध्द करने का प्रयत्न करते है। उर्पयुक्त लालाजी का कथन इसका उदा. है। इस प्रकार चुनाव के वातावरण का विवरण भी प्रस्तुत उपन्यास में मिलता है।

३.११ साम्प्रदायिकता की समस्या --

दुष्यन्तजी के इस उपन्यास में साम्प्रदायिकता की भी झलक मिलती है। इस रचना का मुख्य केन्द्र है राजपुर गांव का हिन्दु इण्टर कॉलेज। राजपुर में मुस्लिम इण्टर कॉलेज भी है। ये दोनों कॉलेज साम्प्रदायिकता की नींवपर खडे हैं। जहाँ

शिक्षा एक धन्धा एवं व्यवसाय बन गया है । अध्यक्ष लाला हरीचंद ने ' मुस्लिम कॉलेज के जवाब मेंकॉलेज का नाम ' हिन्दू इण्टर कॉलेज' रखा था ।

अध्यापकों की नियुक्तियों में भी हमें साम्प्रदायिकता है। की चित्रण मिलता है । हिन्दू कॉलेज में टिचरों की नियुक्तियों के समय सेक्रेटरी गनेशीलाल असिस्टेण्ट टिचर के लिये ब्राह्मण लडके श्रोतिय का समर्थन करते है, तो उपाध्यक्ष चौधरी कोतवाल के मानजे असरार का समर्थन करते है । गनेशीलाल धर्म का आधार लेकर कहते है ' चौधरी साहब आपयाँ उस मुसलमान लौण्डे को मास्टर रखना चाहते है । मैं तो कहूँ कि हिन्दू कॉलेज नाम रखके अगर आप इसमें मुसलमानों कू भरे है तो कहाँ रयी आपकी मरयादा, कहाँ रया धरम ? क्या सारे हिन्दू लौण्डे मर गये ।'[२०] इस कथन में साम्प्रदायिकता नजर आती है ।

हिन्दू कॉलेज का रिझल्ट खराब आनेपर मुस्लिम कॉलेज के सेक्रेटरी पंजे - पनवाडी को खुशी होती है । वह हिन्दू कॉलेज के मेम्बर छदम्मीलाल से कहता है ' सरकार कोई अंधी थोडे ही है जो हिन्दू कॉलेज को रुपये-पे-रुपये बाँटती चली जायेगी । आखिर इस साल हिन्दू कॉलेज में जितने लौण्डे फेल हुए है, तो सारे जिले में नहीं हुए । हमारा हायस्कूल का रिझल्ट भी जिले में म्बर पर है ।'[२१]छदम्मीलाल को इस गर्वोक्ति में साम्प्रदायिकता की बू आयी । वे बोले ' फ़स्ट फिर भी आर्य समाज स्कूल ही आया है बिजनौर का ।'[२२]गाव के बुढे मुकद्दम इन दोनों की बात सुनकर कहने लगे ' रहने दे छदम्मी रहने दे , तेरे स्कूल का भी कोई लौण्डा आज लौं डिप्टी ना हुआ । दूर क्यों जावें अपने खानदान में ही देख ले । जिले लौण्डे पढे कोई साला किसी रोजगार सिट लगा ।'[२३] इस प्रकार साम्प्रदायिकता का चित्रण भी प्रस्तुत उपन्यास में मिलता है ।

<u>आंगन में एक वृक्ष</u> --

दुष्यन्तकुमार का एक उपन्यास आकार की दृष्टि से लघु है । इसकी कथावस्तु का संबंध अस्त हो रही है जमींदारी व्यवस्था है । दुष्यन्तकुमार ने इसमें एक जमींदार परिवार की कहानी बताकर जमींदारों की ऐय्यासी, क्रूरता, रीतिरिवाज, धर्म और

जाति-पाँति को लेकर रूढिगत मान्यता आदि पक्षों का चित्रण किया है। इसमें मिलनेवाली समकालीन समस्याएँ इस प्रकार हैं।

३.१२ जमींदारों की क्रूरता --

मुरादाबाद के चौधरी रामप्रसाद एक वकील और संपन्न जमींदार हैं। चौधरी रामप्रसाद बडे चालाक व्यक्ति हैं। वे अवैध मार्ग से धन प्राप्त करके संपन्न बन गए थे। रामप्रसाद राजपुर के चौधरी साहब को दामाद बनाने के उद्देश्य से अपनी छोटी पुत्री का उनसे विवाह करते हैं। छोटी पुत्री कनक कुँवर चंदन को जन्म देकर मर जाती है। रामप्रसाद दामाद चौधरी का दूसरा विवाह कराते हैं। रामप्रसाद अपनी जायदाद पोते चंदन के नाम करके मर जाते हैं। चंदन बालिग होने तक पिता चौधरी और मौसी मैना की देखरेख में रहता है। मैना और चौधरी में जायदाद को हडपने के लिये घात-प्रतिघात चलता है। अंत में चौधरी पिता होने के नाते चंदन की जायदादपर अधिकार प्राप्त करते हैं।

चौधरी ऐय्याश ,क्रूर व्यक्ति हैं। वे शराब और औरत में डूबे रह‍े वे हमेशा गालियाँ देते और दूसरोंपर अधिकार जमाते रहते हैं। उनका बे[illegible] एक दिन शराब पीकर बेहोश हो जाता है। गाँव के लोग उसे उठाकर [illegible]ाते हैं। चंदन का हाल देखकर वे आपे से बाहर हो जाते हैं। चीखकर गालियाँ देते है ' हरामजादे। आज मैं तुझे पिलाऊँगा। साले ने जिन्दगी को शराबखाना बना लिया है। सुअर के बच्चे,बदजात। आज मैं तेरी खाल खींचकर भूसा भर दूँगा।' [२४] उनका यह कथन क्रूरता को स्पष्ट करता है। जमींदारों की क्रूरता उनके रग-रग में भरी हुयी है। मौका मिलते ही वे बेरहमी से पेश आते हैं। उनके मुंशी को गाँव के भिक्खन चमार ने जुतों से मारा। इसकी खबर मिलते ही चौधरी जी भिक्खन के खानदान को गालियाँ देने लगे। मुंशीजी के शब्दों में वे तो उसी वक्त ताँगा वापस लौटाने को कह रहे थे। मगर मैंने सोचा कि ये तो ठहरें जमींदार इनका क्या बिगडेगा ? जायेंगे और उठाकर दस बीस बेंजे या जूते सिरपर दे मारेंगे।' [२५]

चैाधरी को क्रोध जल्दी आ जाता था । उनकी क्रूरता के किस्से देखने को मिलते है । मैनाजी अपने जीजा चैाधरी के वैवाहीक जीवन में फूट डालने के लिये भभूत का प्रयोग करती है । नौकर रामफल मैनाजी को किसी साधू से भभूत लाकर देता है । शुरु में चैाधराइन को इसकी खबर नहीं मिलती । असल बात समझनेपर वह पति चैाधरी से कह बैठती है । चैाधरी आग बबूला हो जाते है । गालियाँ देते हुये नैाकर रामफल को बुरीतरह से पिटते हैं सुअर के बच्चे, नीच कमीने । जिस थाली में खाता है, उसी थाली में छेद करता है । आज मैं तेरी बोटी-बोटी नोच दूँगा । तेरी यह मजाल कि तू मेरे लिये फकीरों से भभूत लाये । साले तेरी भभूत आज मैं झाडूँगा । इस प्रकार चैाधरीजी में वे सब गुण क्रूरता मिलती है, जो एक जमींदार में होती है । जमींदारों की क्रूरता के साथ उनका अय्यासी जीवन भी आलोच्च उपन्यास में चित्रित हुआ है । जमींदार चैाधरी साहब अपने ससुर रामप्रसाद की मृत्यु के बाद अय्यासी बनते हैं । वे यार दोस्तों को जमाकर शराब पीते हैं । रंडियों को अपने कमरे में लाते हैं । सैकडों रुपये शराब-रंडियों पर उडाते हैं । मैनाजी को यह अय्यासी पसंद नही आती । वह टिप्पणी करती है - वह जो शराब और रंडियों पर सैकडों रुपये फूँकते है, वे कहाँ से आते है ? चैाधरी का बेटा चंदन भी शराबी रंगिला बनता है । स्वयं चैाधरी चंदन को शराब नाचरंग के बारे में छूट देता है । पत्नी के विरोध करनेपर कहते है " चंदन जमींदार है, जमींदार का बेटा है, जमींदारों वाली आदते नही सीखेगा तो क्या धुने जुलाहों वाली सीखेगा । पुराने जमाने में तो बडे घरों के लडकों को तहजीब और अदबो-आदाब सीखने के लिये तवायफों के पास ट्रेनिंग के लिये भेजा जाता था ।" २७ उनके विचारों में शराब, नाचरंग, यह सब जमींदारों के लिये आवश्यक है । इस प्रकार हम देखते है कि चैाधरीजी में वे सारी बाते है जो एक अय्यास मींदार में रहती है ।

३.१३ धर्म रीतिरिवाज --

धार्मिक आडंबर का भी चित्रण आलोच्च उपन्यास में मिलता है । मुरादाबाद के लखपति जमींदार और प्रसिध्द वकील चैाधरी रामप्रसाद की बडी बेटी अशर्फी

कुँवर विवाह के तीसरे दिन ही ससुराल छोड कर वापस आती है। मायके आने के बाद अशर्फी कुँवर उर्फ मेनाजी धार्मिक विधि-विधानों के साथ संयम और नियमपूर्वक रहने लगती है। सनातन धर्म के कर्मकांड में मेनाजी की गहरी निष्ठा रहती है। उनके यहाँ अक्सर पंडीत,साधु महात्मा आते रहते है। मेनाजी साधु महात्माओं का आदर सत्कार बडी लगन से करती। ऐसे धर्म पुरूषों के लिये मंदीर के पास एक कोठरी भी बनवाती है। धार्मिक आडंबर का चित्र देखिये --" मेनाजी पहले पीतल का कलश माँजकर स्वयं कुएँ से जल भरती थी,फिर जल छिडककर लकडियों को पवित्र करती थी।"[२८] रसोई केलिये लकडीयों को जल छिडककर पवित्र पवित्र करना आडंबर है।

३.१४ पारिवारिक संघर्ष की समस्या --

आलोच्य उपन्यास जमींदार परिवार की कहानी प्रस्तुत करता है। जमींदार परिवार में जायदाद को लेकर संघर्ष चलता है। राजपुर के चौधरी ,मुरादाबाद के जमींदार वकील रामप्रसाद के जमाई है। उनका पुत्र है चंदन। वकील रामप्रसाद अपनी सारी जायदाद चंदन के नाम करते हैं। इसी जायदाद को लेकर परिवार में संघर्ष चलता है। वकील साहब मरने से पूर्व वसीहत बनवाते है " चंदन की नाबालिगी के दौर में मेरी दुख्तर अशर्फी कुँवर चंदन के वली की हैसियत से सारी जायदाद की देखभाल व इन्तजाम करेगी। लेकिन किन्ही वजूहात से अगर चंदन उनके पास रहना पसंद न करे तो इस जायदाद की देखभाल वसूली व इन्तजाम वह शख्स करेगा, जिसके पास कि चंदन रहना पसंद करे।"[२९]

वकील साहब की इसी वसीहत के कारण उनकी बेटी अशर्फी कुँवर उर्फ मेना और दामाद चौधरी के बीच स्वार्थ के कारण घात-प्रतिघात चलता है। दोनों चंदन को अपनी देखरेख में रखकर जायदाद का उपभोग लेने का प्रयत्न करते हैं। मेना यही प्रयत्न में लगी रहती है कि चंदन केवल उनके पास रहे। वह चंदन को अपने स्नेह बंधनों में बाँध रखने का प्रयत्न करती है। उसकी हर जिद पूरी करती है। उसे चवन्नी रुपया देकर खुश करती है। मेनाजी चंदन के सामने उसके पिता चौधरी

की काली करतुतो, बुराईयों की चर्चा नमक मिर्च लगाकर करती है। ` मुझे तो बस इसका ही खयाल है। माँ सौतेली है। बाप शराबी और रंडिबाज है। सब उडा देगा। इसके लिये कौडी नहीं बचेगी।'[30] चंदन अपने पिता से घृणा करने के लिये मेनाजी जानबुझकर शराबी, रंडीबाज शब्दों का प्रयोग करती है। वह यह जताने का प्रयत्न करती है कि चंदन का हीत केवल वह देखती है। मेनाजी रोज तीसरे पहर चंदन को अपने पास बुलाकर बिठा लेती। ठीक उसी समय नौकर रामफल चौधरीसाहब के कमरे की गंदगी का बखान करता है।` मेनाजी मैंने सुबह जब कमरा साफ किया तो बस पूछो मत, उसमें दो तीन जगह उल्टियाँ पडी हुई थी, जिसपर मक्खियाँ भिन भिना रही थी और टूटी हुई बदबूदार बोतले पलंग के नीचे लुढक रही थी।'[31] इस प्रकार मेनाजी घर के नौकरों द्वारा भी चौधरीजी की बदनामी करती रहती है।

चंदन की माता मरने से उसके पिता चौधरी का दूसरा विवाह होता है। सौतेली माता बीजी चंदन से विशुध्द स्नेह करती है। चंदन भी उसे सबसे अधिक आदर देता है। एक दिन चंदन की सौतेली माता बीजी चंदन को पास बिठाकर खिला देती है। उसी दिन मेनाजी का कहर टूट पडता है` आगे इसे हाथ मत लगाना। मैं बताये देती हूँ।'[32] चंदन को उसकी विमाता प्यार करे यह बात मेनाजी पसंद नही कर पाती। चौधरी के साथ विमाता बीजी को भी वह बदनाम करती है। चंदन से कहती है` वह डायन है। जिस दिन से आयी है तेरे नानाजी बीमार पडे है। उसके पास मत जाना।'[33] मेना अपने बटनोई चौधरी और उनकी दूसरी पत्नी बीजी के बीच दिवार बनती है। पति-पत्नी को मिलने से रोकती है। पति-पत्नी में उदासी उत्पन्न करने के लिये भभूत का भी प्रयोग करती है।

इधर चौधरीसाहब भी कुछ कम नहीं रहते। उन्हें विश्वास रहता है कि चंदन उनका बेटा है वह उन्ही के पास रहना पसंद करेगा। चंदन बालिग होनेपर मेना और चौधरी में चंदन को लेकर काफी वादविवाद होता है। अंत में चंदन अपने पिता के साथ रहना पसंद करता है। वसीयत के मुताबिक चौधरी का जायदाद

पर अधिकार हो जाता है। चंदन वापस मैनाजी के पास न जाए इसकी वे पूरी खबरदारी लेते है। चंदन को शराब की आदत डाल देते है। नाचरंग में शामिल कराते हैं। इतनाही नही तो चंदन को अपने पास रखने के लिये गांव में नटनियों को बुलाते हैं। चंदन को नटनियों के पीछे पडने के लिये प्रेरित करते हैं। इस प्रकार जायदाद हथियाने के लिये चंदन को लेकर परिवार में संघर्ष चलता है। इसी पारिवारिक संघर्ष का दुष्परिणाम चंदन के पतन में होता है।

३.१५ निष्कर्ष --

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार की ये रचनाएँ समकालीन समस्याओं को उजागर करती है। आजादी के बाद शिक्षा क्षेत्र के भ्रष्टाचार ,खत्म होती हुयी जमींदारी व्यवस्था,जमींदारों की अय्याशी क्रूरता, चालाकी,पूँजीवादी मनोवृत्ति ,साम्प्रदायिकता,आदि सभी बातों को प्रस्तुत करने में दुष्यंतजी को सफलता मिली है। दोनों उपन्यासों में समकालीन समस्याओं को ही प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ

१ छोटे-छोटे सवाल - ले.दुष्यन्तकुमार - पृ.६

२ - वही - पृ.१५

३ - वही -

४ - वही - पृ.९०

५ - वही - पृ.३९

६ - वही - पृ.६

७ - वही - पृ.८९

८ - वही - पृ.१०२

९ - वही - पृ.२४९

१० - वही - पृ.१७६

११ - वही - पृ.२४८

१२ - वही - पृ.१३९

१३ - वही - पृ.१३८

१४ - वही - पृ.१९९

१५ - वही - पृ.२४२-४३

१६ - वही - पृ.२४४

१७ - वही - पृ.१९१

१८	छोटे-छोटे सवाल - ले.दुष्यन्तकुमार	पृ.२१९
१९	- वही -	पृ.२२०
२०	- वही -	पृ.२५
२१	- वही -	पृ.४८-४८
२२	- वही -	पृ.४८
२३	- वही -	पृ.४८
२४	आँगन में एक वृक्ष - ले.दुष्यन्तकुमार	पृ.१६
२५	- वही -	पृ.२५
२६	- वही -	पृ.६६
२७	- वही -	पृ.७९
२८	- वही -	पृ.५२
२९	- वही -	पृ.६२
३०	- वही -	पृ.५८
३१	- वही -	पृ.६०
३२	- वही -	पृ.५१
३३	- वही -	पृ.५१-५२ ।